# कलीसिया अध्याय 27

| 1 | **प्रार्थना** |
|---|---|

***समूह अगुवा।*** अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

| 2 | **बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]*<br>**लूका 8:1-11:28** |
|---|---|

***अपनी बारी*** आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स को *पढ़ें*) कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (लूका 8:1-11:28) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

| 3 | **याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]*<br>**(3) तीतुस 2:4-5** |
|---|---|

**दो दो करके *पुनरावलोकन* करें।**
**(3) प्रेम व अधीनता। तीतुस 2:4-5।** ताकि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें; और संयमी, पतिव्रता, घर का कारोबार करनेवाली, भली, और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा होने पाए।

| 4 | **शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]*<br>**मसीही परिवारों में बच्चों को प्रशिक्षित करना** |
|---|---|

***परिचय।*** यह शिक्षा बच्चों को प्रशिक्षित करने के सम्बन्ध में है। इस अध्याय में हम सीखेगें कि बाइबल बच्चों को प्रशिक्षित करने के हेतू मसीही माता पिता की भूमिकाओं के बारे में क्या कहती है। "प्रशिक्षित करने का अर्थ" बच्चों को बौद्धिक, शारीरिक, नैतिक और आत्मिक शिक्षाएं व अभ्यास प्रदान करें। इसके अलावा आप मैनुएल 7 और परिशिष्ठ 9 में "बच्चों को अनुशासित करने के लिए माता पिता की जिम्मेदारी" का भी अध्ययन कर सकते हैं।

अभिभावक हो सकता है कि बाइबल में लिखें इन सिद्धान्तों को पढ़कर मायूस हो जाएं। हो सकते हैं कि वे महसूस करें कि वे अच्छे माता पिता नहीं है या वे कभी भी अपने व्यवहारिक जीवन में बाइबल में दिये गये सिद्धान्तों का पालन नहीं कर पाएगें। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य अभिभावको को निराश करना नहीं है, वरन इसका उद्देश्य उनके बच्चों को प्रशिक्षित करने तथा सिखाने में सहायता करने के लिए उन्हें एक रूपरेखा प्रदान करना है। ज्यादातर माता पिता अपना पहला बच्चा होने के बाद ही बच्चों को सिखाने या उन्हें

प्रशिक्षण देने के बारे में विचार करते हैं। बहुत से माता पिता अपने बच्चों को सिखाने या प्रशिक्षण देने के समय में अत्यन्त अनुभवहीन होते हैं।
आप अपने सिद्ध होने तक अपने बच्चों को शिक्षा देने या प्रशिक्षित करने का इन्तज़ार न करें। परमेश्वर ने माता पिता के हाथों को में बच्चों को उनके द्वारा अनुभव प्राप्त करने के लिए भी सौंपा है। परमेश्वर माता पिता को अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने, प्रोत्साहित करने तथा उन्हें अनुशासित करने का अनुग्रह प्रदान करता है। इसलिए अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए पहले किसी एक क्षेत्र या पहलु का चुनाव कर लें और जब आपको ऐसा लगे कि आपका बच्चा उस क्षेत्र में निपुण या सिद्ध हो गया है तो आप दूसरे क्षेत्र के बारे में विचार कर सकते हैं। अपने बच्चों को पालन पोषण करते समय हमेशा परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहें!

नीतिवचन 22:6 में लिखा है कि, "लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।" "शिक्षा देने" का अर्थ बच्चे को परमेश्वर की इच्छा पर चलाने वाले रास्तों के लिए समर्पित करना या दे देना है। इसका अर्थ बच्चे को शिक्षा देना तथा बाद में उन शिक्षाओं को उसके जीवन में लागू करने के लिए प्रशिक्षित करना। माता पिता के लिए "शिक्षा देना" और "प्रशिक्षण प्रदान करना" समान नहीं है। एक बच्चे के लिए "सुनना" और "सीखना" समान नहीं है!

माली दाख को यह बताने के द्वारा प्रशिक्षित नहीं करता कि उसे कैसे बढ़ता है! प्रकृति में बढ़ने के लिए बहुत से सैद्धान्तिक शिक्षा उपलब्ध हैं! लेकिन माली, दाखलता को *छांटता* और उसे *नियन्त्रित* करता है, वह उसे एक दिशा देता तथा उसे *सही* दिशा में बढ़ने के लिए *अगुवाई* करता है। हर वर्ष वह उसमें से सड़ी गली व मुर्झाई हुई पत्तियों को छांटता है, ताकि अच्छी डालियां और बेहतर फल ला सकें। इसी प्रकार से माता पिता भी अपने बच्चों को शिक्षा देने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए योजना बनाते हैं और उन्हें सही दिशा में बढ़ाने के लिए उन पर सीमाएं निर्धारित करते हैं। कई बार हमें उन्हें छांटने और नियन्त्रित करने तथा उन्हें फलवन्त बनाने के लिए कुछ निर्धारित काम देने, अभ्यास करनाने और विशेष करके प्रोत्साहित करने की जरूरत पड़ती है।

## क. प्रशिक्षित करने का तरीका

***पढ़ें:*** 1 कुरिन्थियों 11:1; इफिसियों 3:20; इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21 (इन शब्दों पर खास ध्यान दें: रिस दिलाना, निर्देश देना, प्रशिक्षण)। गलातियों 6:4-5 ; नीतिवचन 10:17।
***शिक्षा दें।*** बच्चों को शिक्षा देने के चार प्रमुख तरीके निम्नलिखित हैं:

### 1. बच्चों के लिए एक आदर्श बनें और उनके लिए प्रार्थना करें।

अगर माता पिता किसी शिक्षा या सिद्धान्त का पालन अपने जीवन में स्वयं नहीं कर रहे हैं तो उन्हें बच्चों को सिखाना व्यर्थ है! इस प्रकार का कपट बच्चो को केवल रिस दिलाता या उनमें चिढ़न उत्पन्न करता है! अच्छी आदतों को माता पिता द्वारा केवल "सिखाया" नहीं जाता है, वरन वे अपने माता पिता को वैसा करते हुए देखते तथा उनके साथ मिलकर वैसा करते हैं! अत: माता पिता को अगर अपने बच्चों को सिखाना है तो उन्हें सबसे पहले अपने आप को प्रशिक्षित करना होगा। और माता पिता जानते हैं कि उन्हें ऐसा करने के लिए परमेश्वर की सहायता की बहुतायत से आवश्यकता है इस कारण वे प्रार्थना करने के द्वारा परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं। परमेश्वर ने माता पिता की कल्पनाओं और प्रार्थनाओं से बढ़कर उनके बच्चों के लिए करने की प्रतिज्ञा की है(इफिसियों 3:20)!

## 2. बच्चे को बाइबल में से शिक्षा दें।

प्रशिक्षिण अच्छे सिद्धान्तों या सत्यों की शिक्षा देने से प्रारम्भ होता है। बच्चे के लिए बाइबल में प्रगट सत्य के ज्ञान को ग्रहण करने की अति आवश्यकता है। बाइबल के सत्यों या सिद्धान्तों में प्रमुख मत,प्रमाणिकता, मान व मानदण्ड शामिल होते हैं। माता पिता को बच्चों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बाइबल का इस्तेमाल करना चाहिए। बच्चों के सामने इस बात को प्रदर्शित करें कि बाइबल में जीवन के हर एक महत्वपूर्ण सवाल का जवाब निहित है।

बच्चे की यह *समझ* में आना चाहिए कि यह सत्य (ज्ञान) क्या है। उसे इस बात का पता होना चाहिए कि *इस शिक्षा* में क्या महत्वपूर्ण है और वह क्यों महत्वपूर्ण है। उसे कामों को ठीक ढंग से करने की *बुद्धि* प्राप्त करनी चाहिए: अर्थात इस काम को कब करना चाहिए, किसके साथ क्या करना चाहिए और इस काम को करने को सबसे उत्तम तरीका क्या है। इसी कारण माता पिता को बच्चों को सत्य की शिक्षा देते समय, आज्ञा पालन करने हेतू प्रेरित करते, और व्यवहारिक अभ्यासों की शिक्षा देते समय बाइबल का इस्तेमाल करना चाहिए।

## 3. बच्चों में अच्छी आदतों को अर्जित करने के लिए बच्चों को प्रशिक्षण दें( अभ्यास द्वारा )।

अच्छी आदतों को अर्जित करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। बच्चे को सत्य व शिक्षा का अपने जीवन में *मानना* और *पालन करना* सीखना चाहिए।
पालन करना तीन अलग अलग स्तरों पर सीखा जाता है:

- प्रथम, बच्चा माता पिता को करते देख और उनके साथ मिलकर काम करने के द्वारा सीखता है।
- वह किसी व्यक्ति के निरिक्षण में अपने आप शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करने करना सीखता है।
- अन्त में, वह शिक्षाओं को बिना किसी निरिक्षण के आदतन अपने आप करता है।

बच्चों को अत्यधिक आग्रह और प्रोत्साहन की जरूरत होती है इसलिए माता पिता को चाहिए कि वे स्वयं अपने बच्चों का प्रशिक्षण व मार्गदर्शन करें। आदतों का अभ्यास करने के क्षेत्र में, माता पिता और बच्चों को यह जानना बहुत जरूरी होता है कि सच्ची "आज़ादी" की अपनी सीमाएं होती हैं। इसलिए माता पिता एक ही समय पर अपने बच्चों को ध्यान बहुत सी चीज़ों की ओर आकर्षित होने से बचाएं। अच्छी आदतों को सिखाने के लिए, माता पिता अपने बच्चों की तुलना किसी अन्य बच्चे से न करें, क्योंकि परमेश्वर ने हर बच्चे को विशेष व अलग बनाया है। तुलना करने से मायूसी छा जाती है। वरन माता पिता को अपने बच्चे को उसकी उन्नति व प्रगति देखकर उसे अनापेक्षित तौर पर उपहार या पुरूस्कार देकर उसकी तारीफ करनी चाहिए।

## 4. जब आपका बच्चा गलत रास्ते पर जा रहा हो तो आप समझाएं व ताड़ना ( दण्ड ) दें।

प्रशिक्षण में संशोधन व ताड़ना(दण्ड) भी शामिल होते हैं। इससे बच्चे को उस मार्ग में चलने में सहायता मिलती है जिसमें उसे चलना चाहिए। परिशिष्ट 9 देखें। ताड़ना करते या सज़ा देने के सन्दर्भ में, माता पिता को निम्नलिखित चीज़ों के बीच ध्यान रखना चाहिए:

- बच्चे को अपने माता पिता के प्रेम के पुनः निश्चय की आवश्यकता होती है।
- बच्चे का अपने माता पिता के अधिकार का विद्रोह करना।

## ख. प्रशिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र

***परिचय।*** लूका 2:52 में हम पढ़ते हैं कि, "और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" उपरोक्त वचन यह दर्शाता है कि परमेश्वर हमारे जीवन के निम्न क्षेत्रों को महत्पवूर्ण मानता है:

- "बुद्धि" ज्ञान का वरन प्राप्त ज्ञान को जीवन को अनेकों परिस्थितियों में इस्तेमाल करने का क्षेत्र है।
- "डील-डौल" शारीरिक विकास का क्षेत्र है।
- "परमेश्वर का अनुग्रह" एक आत्मिक क्षेत्र है।
- "मनुष्य का अनुग्रह" सामाजिक क्षेत्र है।

यहां पर भावनात्मक क्षेत्र का ज़िक्र नहीं किया गया है लेकिन हमारी भावनाएं हर क्षेत्र अटूट भाग हैं। लूका 2:52 में दर्शाये गये क्षेत्र जीवन के अति विराट क्षेत्र हैं, जिनका वर्णन इस अध्ययन में नहीं किया जा सकता। हम इसके अलावा आज्ञाकारिता, आदर, परमेश्वर के साथ चलने, संयम और ज़िम्मेदारी का आभास जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करेंगें। इस विषयों को हम बच्चे के विकास से अलग नहीं कर सकते।

### 1. बच्चे को आज्ञापालन करना सिखाएं।

***पढ़ें*** इफिसियों 6:1।

***खोजें व चर्चा करें।*** बच्चे को सही मार्ग की शिक्षा देना क्यों ज़रूरी व महत्वपूर्ण है?

***ध्यान दें।*** ,प्रशिक्षण के एक मत्वपूर्ण क्षेत्र बच्चे को अपने माता पिता की आज्ञाएं मानना सिखाना है। इफिसियों 6:1 में आज्ञा दी गयी है, "हे बालको, प्रभु में अपने माता पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है"। यह शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा है जिसे हर मां बाप ने अपने बच्चों को देनी चाहिए! यह बच्चों को दूसरों (विशेष कर: पमरेश्वर/मसीह, उसके शिक्षकों, सरकार, अधिकारियों, कलीसिया के प्राचीनों की) की आज्ञा मानना सिखाने हेतू कुँजी है! आज्ञाकारिता सिखाना बच्चों के पालन पोषण करने का प्रमुख भाग है। बाइबल के अनुच्छेद में, मसीही बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञा मानने के लिए कहा गया है, लेकिन इसलिए नहीं कि उनके माता पिता मसीही हैं("परमेश्वर में हैं"), बल्कि क्योंकि बच्चे मसीही अर्थात ("परमेश्वर में हैं")। बच्चे चाहे मसीही हों या न हों लेकिन जब वे अपने माता पिता की आज्ञाओं को मानते हैं तो यह परमेश्वर को भाता है। इसीलिए बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञा मानने की शिक्षा देना "परमेश्वर की निगाहों में ठीक है"।

यदि माता पिता अपने बच्चों को आज्ञाकारिता की शिक्षा देने में असफल रहे हैं तो देर में शुरू करना कभी न करने से बेहतर होता है। माता पिता को अपने बच्चे तथा परमेश्वर के सामने इस बात को मान लेना चाहिए कि वे अपने बच्चों को आज्ञाकारिता की शिक्षा देने में असफल रहे हैं। परमेश्वर उन माता पिता को क्षमा करके बच्चों को आज्ञाकारिता सिखाने के लिए बुद्धि प्रदान करेगा। उसके बाद माता पिता ने अपने बच्चों को आज्ञा मानना की शिक्षा देना प्रारम्भ कर देना चाहिए। यदि माता पिता फिर भी आज्ञाकारिता और विद्रोह को बर्दाश्त करते हैं तो वे वास्तव में अपने बच्चों को अनाज्ञाकारी और विद्रोही बनाने का प्रशिक्षण दे रहे है, जिसका परिणाम आपराधिक जीवन हो जाता है।

माता पिता ने अपने बच्चों को अच्छी और लाभदायक गतिविधियों में व्यस्त रखना चाहिए, नहीं तो वह बच्चा अन्ततः बुराईयां करना सीखेगा और अन्त में अपराधी बन जाएगा। उससे घर की जिम्मेदारियों या पारिवारिक व्यापार में मदद कराने के लिए आग्रह करें और उससे अपेक्षा करें। उसके द्वारा आज्ञापालन करने पर उसकी प्रशंसा करें व उसे प्रोत्साहित करें। यदि वह तुरन्त आज्ञा पालन नहीं करता है, तो बच्चों को किन्ही दो बातों में से एक को करने का विकल्प प्रदान करें, कुछ न कुछ प्रतिक्रिया जरूर दें अन्यथा आप अपने बच्चे को अनाज्ञाकारी होने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। लेकिन, उनका बच्चा अगर उन कार्यों को करने में हिचकिचाता है जो उसे करना चाहिए, तो मातां पिता को उसकी काम करने में तब तक सहायता करनी चाहिए जब तक कि उस बच्चे में काम करने का आत्मा विश्वास उत्पन्न न हो जाए।

## 2. बच्चों को अपने माता पिता और (दूसरों का) आदर करना सिखाएं।

***पढ़ें*** इफिसियों 6:2-3।

***खोजें व चर्चा करें।*** व्यवहारिक तरीके से एक बच्चा अपने माता पिता का आदर किस प्रकार कर सकता है?

***ध्यान दें।*** प्रशिक्षण का दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र, बच्चों को अपने माता पिता तथा दूसरों को आदर करना सिखाना और उनके साथ इज्जत से व्यवहार करना है। "आदर" करने का अर्थ सम्मान करना, पूरे मन व निस्वार्थ भावना या बिना किसी भय के अपने माता पिता का ख्याल रखना तथा उन्हें प्रेम करना है। तीन तरीके हैं जिसके द्वारा बच्चों को अपने माता पिता का आदर करना सिखना चाहिए :

### (1) बच्चा अपने माता पिता के साथ किसी तरह की बहस या झगड़ा न करके उनका आदर करता है।

झगड़ा करने की बजाय, एक बच्चे को अपना दृष्टिकोण को भद्र तरीके से रखना और बाद में परमेश्वर को इस तरीके से काम करने का अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे उसे माता पिता भी प्रसन्न हो सकें। इस तरह से बच्चा यह प्रगट करता है कि वह परमेश्वर की प्रधानता और श्रेष्ठता पर विश्वास करता है। बच्चों को अपने माता पिता और दूसरों की चुगली नहीं करनी चाहिए। चुगली से हमेशा लोगों को अनादर होता है (नीतिवचन 17:9)।

### (2) बच्चा अपने माता पिता की सलाह और सुझावों को मानकर अपने माता पिता का आदर करता है।

बाइबल में लिखा है कि बच्चा सत्य, बुद्धि, शिक्षा और समझ अपने माता पिता से ही सीखता है। जब भी कभी माता पिता अपने बच्चों को कोई सलाह या सुझाव देते हैं तो बच्चों को उन्हें गम्भीरता से स्वीकार करना चाहिए। बच्चों के पास जब अवसर है तो उन्हें अपने माता पिता के वर्षों के अुनभव से सीखना चाहिए।

### (3) बच्चा अपने व्यक्तिगत जीवन में माता पिता को शामिल करके उन्हें आदर प्रदान करता है।

2 कुरिन्थियों 6:11-13 सिखाता है कि मसीहियों को एक दूसरे की "सलाह को स्वीकार करना चाहिए"। बच्चों को अपने माता पिता से बातचीत करने के लिए पहल करनी चाहिए और उनसे प्रश्न पूछना चाहिए। उसे अपनी भिन्न गतिविधियों के बारे में अपने माता पिता से बात करना आना चाहिए। उसे अपने माता पिता को बताना आना चाहिए कि उसने स्कूल या कार्यालय में क्या किया, वह कलीसिया के लोगों और अपने मित्रों के साथ क्या करता है। उसे अपने रिश्तों के बारे में अपने माता पिता से बात करना चाहिए: अर्थात

उसके दोस्त कौन हैं और वह उनके साथ किस प्रकार का बर्ताव करता है। उस बच्चे को अपने माता पिता के साथ अपने विश्वास, अपने विचारों, भावनाओं, और योजनाओं के बारे में बताना चाहिए। अत: मसीही माता पिता को अपने बच्चों के सामने आदर्श बनना चाहिए। यदि मसीही माता पिता अपने बच्चों के लिए अपने हृदय को नहीं खोलते हैं तो वे कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वे उनके बच्चे दूसरों के सामने अपने हृदय को खोलेगें?

## 3. बच्चे को परमेश्वर के साथ चलना सिखाएं।

***खोजें और चर्चा करें।*** व्यवहारिक जीवन में माता पिता बच्चों को अपने जीवन में परमेश्वर के साथ चलने की शिक्षा कैसे दे सकते हैं?

**( 1 ) व्यवस्थाविवरण 6:6-9; 32:46 को *पढ़ें।***

परमेश्वर का वचन माता पिता से उनके बच्चों के मन और जीवन में परमेश्वर की आज्ञाओं को लिखने की आज्ञा देता है। वह कहता है कि, "जब तुम अपने घर में बैठे हो, जब सड़क पर कहीं जा रहे हो, सोते और जागते समय हमेशा परमेश्वर की व्यवस्था पर ध्यान लगाए रहो"। माता पिता और बच्चों को अधिकार देना चाहिए कि परमेश्वर का वचन उनके हाथों के कामों, उनके मन के विचारों, माहौल और उनके घर की गतिविधियों पर नियन्त्रण कर ले! परमेश्वर माता पिता को सिखाता है कि, "जो चितौतियां मैंने तुम्हें बतायी हैं, उन पर अपना अपना मन लगाओ, और अपन बच्चों को भी व्यवस्था के मानने की शिक्षा दो"।

**( 2 ) रोमियों 13:1-5; प्रेरितों 5:29; 1 पतरस 2:10।**

परमेश्वर ने माता पिता को अपने बच्चों को परमेश्वर का ज्ञान सिखाने, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना सिखाने की जिम्मेदारी सौंपी है और इस संसार में किसी को भी उन्हें इन शिक्षाओं से रोकने का अधिकार किसी को भी नहीं है। इसका कारण यह है कि खुद परमेश्वर ने ही संसार के सभी अधिकारियों को भिन्न भिन्न जिम्मेदारियों और सीमाओं के साथ इस संसार में रखा है। यदि कोई सरकार सर्वश्रेष्ठ अधिकार की न मानते हुए मसीहियों से वह काम करवाती है जो परमेश्वर ने मना किया है और मसीहियों को उन कामो ंको करने से मना करती है जिसे परमेश्वर ने उनसे करने के लिए कहा है तो मसीही लोगों उस संरकार का भद्र तरीके से सामना करना चाहिए। क्योंकि जगत की सारी सत्ताएं, बाइबल में प्रगट परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं।

**( 3 ) तीमुथीयस 2 1:5 ; 3:15-17।**

बाइबल वह सर्वोत्तम पुस्तक हैं जिसे हर बच्चे को अपने जीवन में ज़रूर से पड़ना चाहिए। बाइबल लोगों को उद्धार का ज्ञान प्रदान करती है। बाइबल उन्हें सत्य की शिक्षा देती है और उन्हें बताती है कि उन्हें किस प्रकार धार्मिकता के साथ अपनी जीवन व्यतीत करना चाहिए। बाइबल अपरिपक्व मसीहियों और बच्चों को परिपक्व बनाती और उन्हें जीवन में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करती है। इसलिए, माता पिता को अपने बच्चों को बाइबल पढ़ना लिखना और विशेषकर आज्ञा पालन करना सिखाना चाहिए।

माता पिता भिन्न तरीकों का इस्तेमाल कर सकते हैं। वे चाहें तो, पारिवारिक बाइबल अध्ययन का समय रख सकते हैं, उदाहरण के तौर पर, पिता प्रतिदिन जोर जोर से बाइबल के एक खण्ड को पढ़ सकते हैं। फिर वे सब मिलकर उस पर चर्चा कर सकते हैं। वे बाइबल के एक पद को भी याद कर सकते हैं। बच्चे की बढ़ती अवस्था के अनुसार, माता पिता को बच्चों को सुसमाचार के बारे में समझाना चाहिए और यदि उसने प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया है तो उन्हें उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

जब बच्चे बढ़े हो जाएं, तो उनके माता पिता उन्हें अपने व्यक्तिगत साधना का समय बिताना सिखा सकते हैं। एक परिवार अपने पड़ोसियों के साथ मिलकर भी यीशु मसीह की सेवा कर सकते हैं(याकूब 2:15-17)। इस तरीके से बच्चा अपने माता पिता को विश्वासयोग्यता के साथ भक्ति करते हुए देखकर भक्ति करना सीखता है। माता पिता को अपने बच्चों को विश्वास में बढ़ना सिखाना चाहिए ओर उन्हें उन अनुभवों से नहीं रोकना चाहिए जिनके द्वारा उसके लिए परमेश्वर पर विश्वास करना जरूरी है। माता पिता को परमेश्वर के साथ अपने अनुभवों को भी बच्चों के साथ साझा करना चाहिए।

## 4. अपने बच्चों को संयम बरतना सिखाएं।

***पढ़ें*** 2 पतरस 1:5-6; नीतिवचन 10:19; 15:1; इफिसियों 4:26।
***खोजें और चर्चा करें।*** माता पिता अपने बच्चों को किस तरह संयम रखना सिखा सकते हैं?
***ध्यान दें।*** "संयम" का अर्थ अपनी इच्छाओं, बातों और प्रतिक्रियाओं को नियन्त्रित करना है। माता पिता को अपने बच्चों को अपनी इच्छाओं, बातों और कार्यों पर नियन्त्रण करना सिखाना चाहिए। उदाहरण के लिए, माता पिता को बच्चों को चीज़ें देने के लिए परेशान नहीं करना चाहिए। अगर वे ऐसा करते हैं तो, बच्चा हमेशा अपनी इच्छा पूरी करने के लिए हमेशा कामयाब होने वाले तरीके का इस्तेमाल करेगा।

नीतिवचन 15:1 में लिखा है, "(माता पिता का) कोमल उत्तर सुनने से (बच्चे की) जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कहुवचन से क्रोध धधक उठता है।" और नीतिवचन 10:19 में लिखा है कि, "जहां (माता पिता की बातें) बहुत बातें होती हैं, वहां (माता पिता का) अपराध भी होता है, परन्तु जो अपने मुंह को बन्द रखता है वह बुद्धि से काम करता है।" शान्ति और आराम से बच्चों के साथ व्यवहार करने के मामने में माता पिता को एक आदर्श बनना चाहिए। और उसी तरह उन्हें अपने बच्चों को दूसरों के साथ शान्ति और शालीनता के साथ व्यवहार करना सिखाना चाहिए, खास तौर पर जब वे किसी गुस्सा हों।

कई बच्चे अपना गुस्सा बड़े प्रचण्ड तरीके से प्रगट करते हैं, अर्थात उपद्रव करते हुए, जिससे सम्पत्ती का नुकसान होता है, किसी की बेइज्जती होती है, किसी को चोट पहुंचती है,शालीनता भंग होती है या फिर किसी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचता है। बुद्धिमान माता पिता अपने बच्चों को भावनाएं प्रगट करने देते हैं लेकिन उन्हें अपने बच्चे को यह भी सिखाना चाहिए कि वह अपनी भावनाओं को प्रगट करने में संयम बरतें। एक "गुस्सैल अगुवा" सिर से लेकर पैर तक गुस्से से भरा होता है और गुस्सा ही प्रगट करता है(देखें मैनुएल 4, परिशिष्ठ 17, मसीही चरित्रः क्रोध)। माता पिता को अपने बच्चों को संयम बरतना सिखाना चाहिए। जब कभी उसे गुस्सा आये वह हर बार अपनी भावनाओं को सकारात्मक ढंग से प्रगट करने का अभ्यास करे। उदारहरण के लिए, यदि वह उत्पात मचाते हुए अपने क्रोध को प्रगट किया करता था, उसे उत्पात किये बिना अपने क्रोध को प्रगट करना सीखना चाहिए। और जब बच्चा अपने क्रोध को सकारात्मक तरीके से प्रगट करने में कोई बेहतरी दर्ज करत है तो माता पिता उसे प्रोत्साहित या पुरस्कृत करना चाहिए। बच्चों को पांच सकारात्मक तरीकों से संयम प्रगट करना सिखाना चाहिएः

- वे क्रोध करने में धीमें हों, अर्थात, हर एक गलत बात के लिए गुस्सा न हो या हर बात को व्यक्तिगत तौर पर ठोकर के रूप में न देखें(याकूब 1:19)।
- शाम होने तक गुस्सा थूक दें(इफिसियों 4:26)।
- ऐसे बच्चे दूर ही रहें जिस बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है क्योंकि वह उसके जीवन का भी प्रभावित कर सकता है(नीतिवचन 22:24-25)।

- अपने गुस्से को दबाये, इनकार किये या नज़रअन्दाज़ किये बिना, उस व्यक्ति की सकारात्मक गुणों पर ध्यान दें जिससे आप गुस्सा हैं(रोमियों 12:10)।
- उसके द्वारा किये गयी गलतियों का लेखा न रखे(1कुरिन्थियों 13:5)।

### 5. बच्चे को जिम्मेदार बनने की शिक्षा दें।

***पढ़ें*** विलापगीत 3:27

***खोजें व चर्चा करें।*** व्यवहारिक तौर पर माता पिता अपने बच्चों को कैसे जिम्मेदार बनने की शिक्षा दे सकते हैं?

***ध्यान दें।*** युवा अवस्था में जुआ उठाने का एक भाग यह है कि उसे कोई विशेष ज़िम्मेदारी सौंपी जाए और उसे उस ज़िम्मेदारी के प्रति उत्तरदायी ठहराया जाए। माता पिता को घर में और घर के बाहर लगातार अपने बच्चों को ज्यादा से ज़्यादा ज़िम्मेदारियां सौंपनी चाहिये। उदारहण के लिए, उसे सिखाएं कि जिस स्थान पर वह रहता और सोता है उस स्थान को वह साफ सुथरा बनाकर रहे। होने दें कि वह घर की जिम्मेदारियों, बाहर की, दुनाक या कारखाने की जिम्मेदारियों में हाथ बटाए। बच्चे को सिखाएं कि वह पैसों और सम्पत्ति के क्षेत्र में भी ज़िम्मेदार बने। उसे यात्रा करना सिखाएं। उसे हर प्रकार के लोगों और संस्कृति के साथ में व्यवहार करना सिखाएं। उसे सिखाएं कि वह अपने से विपरित लिंग के लोगों के साथ किस तरह व्यवहार करें। और उसे सिखाएं कि वह मण्डली में भी अपनी जिम्मेदारियां उठाए।

## ग. प्रशिक्षण के भिन्न स्तर

*शिक्षा दें।* बच्चों को प्रशिक्षण देने से सम्बन्धित बाइबल की शिक्षाओं को व्यवहारिक जीवन में इस्तेमाल किया जाता बहुत जरूरी है। बच्चों को प्रशिक्षित करने के भिन्न भिन्न स्तर हैं: अनुभवी लोगों को कहना है बच्चे के जीवन का सबसे रचनात्मक हिस्सा शून्य से लेकर पांच वर्ष का और दूसरा छः वर्ष से लेकर ग्यारह वर्ष तक का होता है। एक ग्यारह वर्ष के बच्चे के जीवन के चार छोटे छोटे स्तरों की रूपरेखा कुछ निम्नलिखित है। याद रखें, कि बच्चे के व्यक्तित्व, सैक्स, परिस्थितियों और संस्कृति के कारण इनमें अन्तर हो सकता है।

### 1. प्रशिक्षण का पहला स्तर दो वर्ष की आयु तक होता है।

बच्चों को *आज्ञाकारिता* सिखाने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण काल होता है। शारीरिक क्षेत्र में, एक बच्चे को खाने की आदतों, मोटर कौशल और बातचीत करने की योग्यता आदि को सिखाया जाना जरूरी होता है।

### 2. प्रशिक्षण प्रदान करने का दूसरा स्तर दो वर्ष से तीन वर्ष के आयु के बीच होता है।

इन दिनों में माता पिता ज्यादातर यह देखने का प्रयास करते हैं कि उनका बच्चा किस चीज की सहायता से कितना दूर चल सकता है। *इच्छा* शक्ति के *विकास* के इस काल में उन्हें अनुशासन की शिक्षा देना बहुत महत्वपूर्ण है। माता पिता को बच्चों के लिए हर क्षेत्र में एक सीमा निर्धारित करके उन्हें सुरक्षा प्रदान करने की और उस सीमा को पार करने पर उन्हें डांटने तथा उन सीमाओं के भीतर रहकर कहना मानने पर लगातार उनकी प्रशंसा करने की जरूरत होती है। भावनात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत ही बच्चे को अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करने का प्रशिक्षण मिल जाना चाहिए, खास तौर पर संयम के क्षेत्र में। इस अन्तराल के दौरान, उसे अधिक *सुरक्षा* और *प्रेम* की आवश्यकता होती है और वह अपनी मां के पास रहना पसन्द करता है।

### 3. प्रशिक्षण का तीसरा स्तर तीन वर्ष से पांच वर्ष के बीच का होता है।

**( 1 ) शारीरिक क्षेत्र में।** बच्चे को अपना शरीर साफ सुथरा रखने की शिक्षा देना शुरू कर दें।

**( 2 ) बुद्धि के क्षेत्र में।** एक बच्चा लगातार आपसे पूछता है"क्यों"? माता पिता को ध्यानपूर्वक अपने *बच्चे के प्रश्नों का जवाब देने* के लिए समय निकालना चाहिए। जीवन, वृक्षों, जानवरों आदि से जुड़ी चीज़ों के बारे में प्रश्न पूछने के द्वारा बच्चों के मन में सीखने की मनोदशा का विकास करें। उसकों अच्छी पुस्तकों से कहानियां पढ़कर सुनाएं और अच्छे गीत गाएं। कामों को साथ मिलकर करें!

**( 3 ) सामाजिक क्षेत्र में।** यह समय बच्चे को *सामाजिक कौशल* की शिक्षा प्रदान करने का भी एक महत्वपूर्ण समय होता है, जैसे लोगों से मिलना, हम उम्र के बच्चों को दोस्त बनाना इत्यादि।

**( 4 ) व्यक्तित्व क्षेत्र में ।** उसे *जिम्मेदारियां* उठाना सिखाएं। उदाहरण के तौर पर, उसे सिखाएं कि वह अपने खिलौने अपने आप उठाकर रखे, उससे घर के कामों में मदद मांगें। उसे अपने भाव प्रगट करते समय *संयम* बरतने की शिक्षा लगातार देते रहें, खास तौर पर अपने गुस्से को ठीक ढंग से प्रगट करने के क्षेत्र में।

**( 5 ) आत्मिक क्षेत्र में।** बच्चे को *परमेश्वर के साथ चलना* सिखाने के लिए यह एक सबसे अच्छा समय है। उसे सुसमाचार की शिक्षा दें, उसके सामने ज्यादा से ज्यादा बाइबल की कहानियां पढ़ें, उन्हें बाइबल की आयतें याद करना,प्रार्थना और भजन गाना सिखाएं।

### 4. प्रशिक्षण का चौथा स्तर छः वर्ष की आयु से ग्यारह वर्ष की आयु के बीच होता है।

**( 1 ) शारीरिक क्षेत्र में।** यह बच्चे को घरेलू काम, संगीत, खेल कूद सिखाने का सबसे अच्छा समय होता है। इस उम्र में आप बच्चे को यौन क्षेत्र के बारे में अच्छा ज्ञान दे सकते तथा उन्हें जिम्मेदारी के साथ धन का इस्तेमाल करना सिखा सकते हैं।

**( 2 ) दिमागी क्षेत्र में।** इस उम्र में बच्चा पढ़ना,जमा करना तथा यात्रा करना पसन्द करता है। इसलिए उसे ज्यादा से ज्यादा अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। उसे रोचक वस्तुएं इकट्ठा करने के लिए उत्साहित करें। और समय निकालकर अपने बच्चे के साथ अलग अलग जगहों पर जाएं।

**( 3 ) सामाजिक क्षेत्र में।** यह समय परिवार की परम्पराओं को बच्चों को सिखाने का अच्छा समय होता है, जिससे परिवार आपसी प्रेम में एकजुट बना रहता है। लगातार परिवार में ऐसी पारिवारिक मिलन या सभा का आयोजन करते रहें जिसमें आप एक साथ मिलकर खेले, हँसी मजाक करें या फिर एक साथ कही घूमने जाएं। सबसे अच्छा तरीका यह है कि एक साथ निर्णय लेने या योजना बनाने के लिए एक जगह पर जमा हुआ करें। इन सभाओं के द्वारा बच्चे को यह समझने में सहायता मिलती है कि निर्णय कैसे लिये जाते हैं और उन्हें निर्णय-लेते व योजना बनाते समय साथ में रखना बहुत अच्छा रहता है, खास तौर पर उन निर्णयों और योजनाओं को बनाते समय जिनसे आपके बच्चे का जीवन प्रभावित होने वाला है। यह समय अपने बच्चों को दूसरों की मदद करने का हिस्सा बनाने के लिए उत्तम समय है।

**( 4 ) व्यक्तित्व के क्षेत्र में।** एक बच्चे की अनुभूतियां और उसकी भावनाएं लगातार ज्वलन्त होती रहती तथा जलिट रूप धारण करती जाती हैं। माता पिता को *स्वीकृति* प्रगट करने की जरूरत पड़ती है। यह बहुत जरूरी है कि माता पिता अपने बच्चों को साथ समझ और प्रेम का एक घनिष्ट सम्बन्ध बनाकर रखें।

**( 5 ) आत्मिक क्षेत्र में।** यह समय बच्चों की मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने तथा कलीसिया के दूसरे मसीही बच्चों के साथ (युवा क्लब में या किसी मसीही कैम्पस या सम्मेलन में) दोस्ती बनाने में मदद करने के लिए एक महत्वपूर्ण समय है। परिवार को एक साथ मिलकर बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करना चाहिए। माता पिता को अपने बच्चों को गैर मसीही बच्चों के साथ खेलने के लिए तैयार करना चाहिए। और अन्त में, माता पिता को बच्चों में मसीही सिद्धान्तों की नींव डालन चाहिए। माता पिता को अपने बच्चों के लिए लगातार प्रार्थना करना चाहिए ताकि परमेश्वर उन पर मसीही सिद्धान्तों, आज्ञाओं, मूल्यों और जीवन के स्तर को अपनाने के लिए उन अपना अनुग्रह कर सकें।

| | | |
|---|---|---|
| **5** | **प्रार्थना** (8 मिनट) | ***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना** |

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

| | | |
|---|---|---|
| **6** | **तैयारी** (2 मिनट) | ***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए** |

**( *समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। यदि आपके पास कोई बच्चा है तो, उसे परमश्ेवर के राज्य के सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षा प्रदान करना शुरू कर दें जो बाइबल में लिखी हैं।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 11:29-14:35** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें।** नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **( 4 ) झगड़ों का समाधान करें, मत्ती 5:23-24।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 12** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है( भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।